राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 28 अक्टूबर • 2022

किसान खेतों में ही मेलायें फसल अवशेष

ुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं गेकी विवि के अधीन संचालित नगर कृषि विज्ञान केन्द्र पर फसल ष प्रवंधन योजना तहत आयोजित ण कार्यक्रम के तीसरे दिन कृषकों को अवशेषों को जलाने के वजाय खेतो ाने को लेकर जागरूक किया गया। गया कि फसल अवशेषों को जलाने वल पर्यावरण प्रदूषित होता है, वल्कि भौतिक गुणों इसका प्रभाव से फसलों पर प्रभाव पड़ता थ ही पशुओं के लिए भी हरे चारे की हो जाती है। कृषक महिलाओं को अवशेष प्रवंधन कर मृदा की ऊ शक्ति को वढ़ाने के टिप्स दिये गये। न्द्र अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. काश ने कृषकों को वताया कि स्ट्रॉ कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला जाता है। तत्पश्चात हैपी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की वुआई कर देते हैं। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों को मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है व मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है।

फसल अवशेष प्रवंधन के नोडल अधिकारी डॉ.खलील खान ने किसानों को वताया कि मृदा में कार्वनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है, जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्व उपलव्ध हो जाते हैं। उनके मुताविक कंवाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष निकलते हैं। उन्होंने वताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं, लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत व डॉ. मिथिलेष वर्मा ने भी संवंधित विषय पर किसानों को जागरूक किया।

फसल अवशेष प्रबंधन पर कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

दैनिक जागरण कानपुर 27/10/2022

पयार पर किसानों को जागरूक किया

कानपुर : सीएसएवि के कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कार्यशाला में मृदा वैज्ञानिक डा. खलील खान ने किसानों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि पयार (पराली) को खेतों में मिलाएं और उर्वरा शक्ति बढ़ाएं। डा. निमिषा अवस्थी ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला देती हैं। (वि.)

रहस्य संदेश

वर्ष : 16 अंक : 290 एटा से प्रकाशित शुक्रवार 28 अक्टूबर 2022 पृष्ठ : 8

फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने दिए फसल अवशेष प्रबंधन के टिप्स

(रहस्य संदेश)

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा केंद्र पर आज फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के तीसरे दिन वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने कृषकोंको बताया कि स्ट्रॉ चॉपर कृषि यंत्र से फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ों में काटकर भूमि में मिला दिया जाता है। तत्पश्चात हैप्पी सीडर द्वारा सीधे गेहूं की बुवाई कर देते हैं। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए बताया कि फसल अवशेषों का मल्च के रूप में प्रयोग करके खरपतवारों को भी कम किया जा सकता है। साथ ही साथ मृदा की सेहत में भी सुधार होता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष गर्मी के तापमान को भी कम करता है।फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान किसानों को बताया कि मृदा में कार्बनिक पदार्थ ही एकमात्र स्रोत है। जिसके द्वारा मृदा से पौधों को विभिन्न पोषक तत्वों को उपलब्ध हो जाते हैं। तथा कंबाइन द्वारा फसल कटाई करने पर अनाज की तुलना में 1.29 गुना अन्य फसल अवशेष होता है। यह मृदा में सड़कर कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि करते हैं। डॉक्टर खान ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि फसल अवशेषों में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं लेकिन नाइट्रोजन 0.45 प्रतिशत होता है। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव, मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव एवं पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। केंद्र की वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा ने किसानों एवं कृषक महिलाओं को फसल अवशेष प्रबंधन कर मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के टिप्स दिए और कहा कि ऐसी भूमियों में सब्जी गुणवत्ता पर उत्पाद होती है। इस अवसर पर सहतावनपुरवा, मझियार एवं पांडेय नवादा गांव के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | वर्ष: 14 | अंक: 16 | मूल्य: ₹ 1.00/- | पेज: 12 | गुरुवार | 27 अक्टूबर, 2022

फास्ट फॉरवर्ड ⏭

खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ाने की जानकारी दी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण के दूसरे दिन बुधवार को केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने किसानों को खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ाए जाने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किसान पराली मैं बिल्कुल भी आग ना लगाएं बल्कि पराली को खेतों में मिलाकर खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषित होता है तथा आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है। इस अवसर पर डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उसमें उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं। जिससे पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। डॉ. विनोद प्रकाश ने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है। उन्होंने हैप्पी सीडर, सुपर सीडर एवं मल्चर मशीनों के बारे में भी जानकारी दी। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन में पशुओं के योगदान पर जानकारी दी। इस अवसर पर प्रगतिशील छुन्ना सिंह, राजू राजपूत, रामआसरे राजपूत सहित 25 महिला एवं पुरुष कृषक मौजूद रहे।